चिन्तन में भाषा का महत्त्व (Role of language in thinking) :

चिन्तन में शब्दों (words) का प्रयोग सर्वाधिक होता है। चिन्तन के परिणाम अथवा समस्या-समाधान की सूचना भी अधिकांश शब्दों में ही दी जाती है। सीखे गये नये प्रत्ययों के लिए नये शब्द बनाये जाते हैं और पुराने शब्दों के नये अर्थ भी निश्चित किये जाते हैं। इन आधारों पर बहुत-से मनोविज्ञानियों ने चिन्तन और भाषा के बीच अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध माना है। कुछ मनोविज्ञानियों ने तो बच्चों के भाषा-विश्लेषण के आधार पर उनके चिन्तन का अध्ययन किया है कि जिनमें पियाजे (Piaget) एवं ब्रूनर (Bruner) प्रमुख हैं। चिन्तन और भाषा का सम्बन्ध समझने के लिए एक उदाहरण लें। किसी की मोटरगाड़ी बन्द हो गयी है और किसी भी तरह चालू नहीं हो रही है। यह समस्या भाषा में ढले अनेक प्रश्नों के रूप में प्रकट होती है : क्या पेट्रोल समाप्त हो गया है? क्या इंजन में अधिक पेट्रोल आ गया है? क्या बैटरी बेजान हो गयी है? इत्यादि। यह समस्या प्रस्तुतः भाषा में प्रश्न एवं उत्तर के रूप में बदल जाती है जिससे चिन्तन और भाषा में भेद करना कठिन हो जाता है।

भाषा-योग्यता के बढ़ने से चिन्तन का कौशल बढ़ता है—इसके अनेकानेक प्रयोगात्मक प्रमाण उपलब्ध हैं। **हण्टर** (Hunter, 1917) ने चूहों, कुत्तों, छोटे बच्चों, बड़े बच्चों एवं वयस्कों की विलम्बित प्रतिक्रिया (delayed reaction) को जाँचा। पता चला कि चूहे ४-१० सेकण्ड तक ठीक-ठीक विलम्बित प्रतिक्रिया देते हैं। यदि कुत्ते उद्दीपन की दिशा में ही अपनी शारीरिक स्थिति बनाये रहें तो ५ मिनट तक, छोटे बच्चे ४ मिनट तक, बड़े बच्चे और वयस्क असीम काल तक विलम्बित प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इस आधर पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि चूहे और कुत्ते अपने सिर और शरीर की पूर्वस्थिति बनाये रखने के कारण दिखाये गये उद्दीपन के प्रति शुद्ध विलम्बित प्रतिक्रिया देते हैं, जबकि बड़े बच्चे और वयस्क उद्दीपन अथवा लक्ष्य के स्थान को 'दाहिने', 'बायें' आदि शब्दों में बदलकर याद रखते हैं। इस प्रकार शब्द शुद्ध क्रिया के लिए आन्तरिक उद्दीपन हो जाते हैं जो पशुओं की शारीरिक स्थिति की तुलना में मनुष्यों को अधिक स्थायी स्मरण देते हैं। पशुओं और मानव-व्यक्तियों के बीच का यह भेद **स्पाइकर** (Spiker, 1956) के एक प्रयोग से और भी स्पष्ट होता है। स्कूल के जिन छोटे बच्चों ने शुद्ध क्रिया के साथ युगलित अपरिचित वस्तुओं के नाम भी सीखे उनकी विलम्बित प्रतिक्रियाएँ अधिक शुद्ध हुईं और जिन बच्चों ने केवल शुद्ध क्रिया ही सीखी, अपरिचित वस्तुओं के नाम नहीं सीखे उनकी विलम्बित क्रिया अपेक्षाकृत निकृष्ट देखी गयी। इससे स्पष्ट है कि शब्द सीखने से विलम्बित क्रिया अथवा चिन्तन को सहायता मिली।

याद रहे कि भाषा चिन्तन के लिए सहायक हो सकती है, आवश्यक नहीं है। यदि भाषा चिन्तन के लिए आवश्यक होती तो छोटे बच्चे और पशु—जिन्हें भाषा नहीं होती—समस्याओं का समाधान नहीं कर पाते। समस्या-समाधान मूलतः चिन्तन का एक रूप है और चूहे भी समस्या-समाधान तथा अन्तर्दृष्टि प्रदर्शित करते हैं। इस विषय पर **टौलमैन एवं होंजिक** (Tolman and Honzik, 1930) द्वारा चूहों पर किये गये एक प्रयोग से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। प्रयोक्ताओं ने १५ चूहों को २४ घंटे भूखा रखकर एक उत्थापित व्यूह में प्रतिदिन १० बार दौड़ाया। व्यूह में आरम्भ-स्थल से लक्ष्य-पेटी तक पहुँचने के तीन मार्ग थे—सबसे छोटा, उससे लम्बा और सबसे लम्बा। सबसे छोटे और उससे लम्बे मार्गों का कुछ अन्तिम भाग उभयनिष्ठ था। प्रशिक्षण-अवधि में तीनों मार्ग खुले थे। चूहों ने तीनों रास्तों से लक्ष्य तक पहुँचना सीखा, परन्तु सबसे छोटे मार्ग से ही लक्ष्य तक जाने लगे। जब पहला (सबसे छोटा) रास्ता बन्द कर दिया गया तो वे दूसरे मार्ग (उससे लम्बे) से लक्ष्य तक गये। जब पहले मार्ग को ऐसी जगह बन्द किया गया जो दूसरे मार्ग में भी उभयनिष्ठ था तो चूहे दूसरे मार्ग से नहीं बल्कि तीसरे मार्ग से लक्ष्य तक गये जो सबसे लम्बा था। इससे स्पष्ट हुआ कि उस बाधा से चूहों को अन्तर्दृष्टि हो गयी कि बाधा ऐसी जगह पर है जिससे केवल पहला ही नहीं बल्कि दूसरा रास्ता भी बन्द हो गया है, इसी कारण उन्होंने तीसरा रास्ता चुना।

यह ठीक है कि एक सामान्य मानव-व्यक्ति पशुओं की तुलना में अधिक कठिन समस्याओं का समाधान कर सकता है और यह भी ठीक है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अच्छा समस्या-समाधान करता है। इस आधार पर यह समझना गलत होगा कि पशु और मनुष्य के चिन्तन अथवा मनुष्य में भी विभिन्न व्यक्तिओं के चिन्तन में प्रकार-भेद (qualitative difference) है। यह फिर लिखा जाता है

कि भाषा के कौशल से चिन्तन को सहायता मिलती है। **गैग्ने एवं स्मिथ** (Gagne and Smith, 1962) ने अपने प्रयोग में जिन प्रयोज्यों को इस बात की शिक्षा दी कि समस्या का समाधान करते समय वे अपने विचारों को शब्दों में व्यक्त करते जायें और सामान्य नियमों को बोलते जायें वे अन्य समस्याओं के समाधान में उन प्रयोज्यों से श्रेष्ठ हो गये जिन्हें ऐसी शिक्षा नहीं दी गयी थी।

भाषा और चिन्तन के सम्बन्ध पर मुख्य विवाद यही है कि भाषा चिन्तन की सहायक और उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम है अथवा भाषा चिन्तन की निर्धारक है। जो लोग भाषा को चिन्तन की अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं उनका विश्वास है कि न तो शब्दभण्डार (vocabulary) और न व्याकरण (grammer) का ज्ञान चिन्तन के फलों को निधारित करता है। इन विद्वानों के अनुसार, बच्चों का चिन्तन और भाषा का विकास लगभग स्वतंत्र रूप से साथ-साथ चलता है। बच्चे जैसे-जैसे नये शब्द सीखते हैं वे अपने चिन्तन को अधिक स्पष्टता से व्यक्त करने लगते हैं और निष्कर्षों का स्मरण भी अच्छा हो जाता है। इसके अतिरिक्त भाषा से चिन्तन में और कोई लाभ नहीं होता। **पियाजे** (Piaget) एवं **वाइगोटस्की** (Vygotsky) इस विचार के मुख्य समर्थक हैं। इसके विपरीत, कुछ विद्वानों का विचार है कि भाषा चिन्तन को रूप देती है। बहुत-से भाषाई अध्ययनों (linguistic studies) से इस विचार का समर्थन होता है। विभिन्न समाजों एवं सांस्कृतिक समूहों की भाषा एवं चिन्तन के अध्ययनों पर आधारित यह दावा किया गया है कि उनके चिन्तन का स्वरूप उनके शब्दभण्डार एवं व्याकरण से निर्धारित होता है। **वौर्फ** (Whorf, 1956) के अनुसार, प्रत्येक भाषा का व्याकरण केवल विचारों की अभिव्यक्ति का साधन ही नहीं बल्कि विचारों को रूप देनेवाला भी होता है। उन्होंने **होपी इण्डियन** (Hopi Indian), **वैनकूवर** (Vancouver) आदि की भाषाओं का विश्लेषण करके यह सिद्ध किया कि व्याकरण बाह्य जगत् की वस्तुओं एवं घटनाओं के अवगम को निर्धारित करता है और अवगम कुछ अंशों में चिन्तन के विषय एवं दिशा पर अवश्य प्रभाव डालता है। **स्लोबिन** (Slobin, 1971) ने **वौर्फ** के विचारों का समर्थन किया है। उनके अनुसार, प्रत्येक भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका उपयुक्त अनुवाद किसी दूसरी भाषा में नहीं हो सकता है। अतः शब्दों के अर्थ विभिन्न भाषाओं में विशिष्ट होते हैं और उनसे वस्तुओं एवं घटनाओं का बोध भी अलग-अलग ढंग से होता है। मनोविज्ञानियों के लिए इस विषय पर निर्णायक रूप से कुछ कहना अब भी कठिन है।